

## श्रीमद्भागवत का रास—वर्णन



गीतांजलि तिवारी (शोधछात्रा)

एम.ए. संस्कृत

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म0प्र0)

श्रीमद् भागवत के दशम स्कन्ध का रास—वर्णन काव्याश्रित है। भागवत निगमकल्पतरु का स्वयंफल माना जाता है। स्वयं भागवत में कहा गया है।<sup>1</sup> पञ्चाध्यायी के अन्त में श्रीशुकदेव जी ने कृष्ण के द्वारा सेवित रासरात्रियों को 'सर्वा शरत्काव्यकथारसाश्रया' कहा है। अतः रासरमणात्मक रात्रियों के वर्णन का आधार काव्यरस श्रृंगार है, काव्यशास्त्रविहित विभावानुभाव संचारी भावादि ही है। प्रायः काव्य शस्त्रों में नायिका का आलम्बन विभाव रूप से तथा नायक का रसाश्रय रूप से लक्षण तथा वर्णन होता है, किन्तु यहाँ गोपी—कथा में इसके विपरीत हुआ है। इस प्रसंग में जो विभाव—विपर्यय हुआ है, वह अध्यात्म दृष्टि से है। अतः भागवतकार कृष्ण का चित्रण आलम्बन रूप से ही करते हैं। रास—अध्याय के आरम्भ में भागवतकार अवश्य ही श्लोकनय में कृष्ण को माना रसाश्रय रूप से वर्णित करते हैं। यहाँ का चित्रण कामोद्दीपक रूप से ही है। विधु बहुत दिनों के बाद अपनी वधू से मिला है। वह अपने सुखद हाथों से प्रिया प्राची आशा के कपोलों पर कुंकुम लगाता है। पुनः भागवतकार शशिमण्डल को 'रमाननाभम्' कहकर उस रमाननाभ विधु के कोमल 'गोभिरंजितं वनम्' का अंकन करते हैं। अपनी प्रियतमा की आभा उन्हें सुधांशु में दीख पड़ती है वह विधुवदन भी कुंकुमारूण है। एक युवक नायक के लिए कामोद्दीपन की पर्याप्त सामग्रियां एकत्रित कर दी गई हैं। कुंकुम से कपोल को रंजित करते हुए प्रिय के मिलन का दृश्य तथा स्ववधू की छाया का दृश्य उपस्थित करके भागवतकार कृष्ण को रसाश्रय रूप से भले ही वर्णित किया हो, किन्तु वे कृष्ण के आत्मतन्त्र, अच्युत स्वरूप को अपहृत होने नहीं देते हैं। भागवत में रसाश्रय गोपियां हैं और आलम्बन कृष्ण हैं। आलम्बन के ही शरीर और वेष—सौन्दर्य का वर्णन होता है। कृष्ण तो स्त्री मात्र के लिए काम है। वे वनिताओं के उत्सव हैं, उनका स्वरूप त्रैलोक्य सौभग्य है। त्रैलोक्य लावण्य ही उनके रूप में शरीर को उठा है। उनमें अखिल सर्वग सौष्ठव राशीभूत हो उठा है। वे दर्शनीय तिलक हैं। उनका मुख लावण्य सार है, वह कुटिलनीलकुन्तलावृत है। उनके मुख पर सुन्दर कपोल और उन्नत नासिका है। उनके पाणि पाद, मुख, लोचन, के उपमान बहुशः सरोज से दिये गये हैं। कृष्ण का मुख ऊँखों के लिए पानपात्र हैं गोपियां अपने लोचन—मधुपों से उनके मुख—मकरन्दरस का पान करती हैं। कृष्ण की

आँखें, शारदीय सुन्दर सरोजों के उदारगत लावण्य को भी मात करने वाली हैं, ये आँखें गोपियों का मानो वध ही कर देती हैं। असित कुटिल कुन्तल और बदरपाण्डुवदन तो गोपियों के काम को उदीप्त करते हैं। उनकी वाणी भी चैतन्यहारिणी है, कामदायिनी है। पल्लव गोपियां स्वयमेव अशुल्क किंकरी हो जाती हैं। समरस लोक सम्बन्धों को तोड़ देती हैं। गोपियां कहती हैं कि जिस दिन से मोहन के पाद पदम को उन्होंने देखा है तभी से वे कृष्ण के वशीभूत हो गई हैं। वे कृष्ण कथा का गायन करते ही कामावेश से बिहतेन्द्रिया हो जाती हैं गाने में अक्षमा हो जाती हैं। कृष्ण के सुन्दर स्मित निरीक्षण से वे तीव्र कामसन्तप्ता होकर उनसे दास्य याचना करती हैं। कृष्णदर्शन से उन्हें परमानन्द होता है। हृदरोग शान्त हो जाता है। वे परमोत्सव से निर्वृता हो जाती हैं। दर्शनीय-तिलक श्रीकृष्ण प्रणयिजनों के नर्मद है। अनंगदीपन है। कृष्ण न केवल गोपियों के लिए आलम्बन हैं, अपितु वे समस्त रसों के आलम्बन हैं। यशोदादि वृन्द नारियों के लिए वात्सल्यरस के आलम्बन हैं। भागवत में प्राप्त होता है कि भौमासुर ने बलपूर्वक राजाओं से सोलह हजार राजकुमारियाँ छीनकर अपने यहाँ रखी थी। ये राजकुमारियों ने अन्तःपुर में आये हुए भगवान को देखकर मन ही मन पति रूप में स्वीकार कर लिया।<sup>2</sup>

**विभाव (देश—विभाव, काल—विभाव, कला—विभाव, वेष—भूषा—विभाव)**— वृन्दावन का प्रदेश कालिन्दी का पुलिन और कृष्ण का उपवन ये देश—विभाव हैं। यहाँ शारदीय मल्लिकायें, कुमुद और कमल कुसुमित हैं। वृन्दावन का यह कृष्णोपवन अखण्ड मण्डल रमाननाभ की कोमल रश्मियों से रंजित है। भौंरे फूलों पर गुनगुना रहे हैं, इसके तटा पल्लव यमुनानिल से लीलापूर्वक दोलायमान हैं, इस दोलायमान तथा पुष्पित उपवन की सुंगम्भि से कृष्ण का कछार महमहा रहा है। इसी चन्द्रज्योत्सना—ध्वलित उपवन को देखकर भगवान् ने वामलोचना व्रजवानिताओं के लिए मनोहर तथा अनंग—दीपन गीत को गाकर उनका आहवान किया था।

कालविभाव के रूप में शरद ऋतु है, पूर्णिमा तिथि है, प्रदोष वेला है। दीर्घकाल के बाद समागम होने पर उडुराज अपनी प्रिया प्राची के प्रसादनार्थ उसके मुख पर अपने करों से लालिमा का लेपन करते हुए तथा चराचर को अशोक करते हुए उदित हुए हैं। इस विधु ने कुमुदिनी को प्रफुल्लित कर दिया है, विधु की भी आभा रमा के नवकुंकुम रंजित वदन के समान हैं। शारदीय मल्लिकाएं, कुमुदादि पुष्प अपने सुवास से वृन्दावन के कृष्णोपवन को सुवासित कर रहे हैं। इस प्रकार सुवासित शारदीय रात्रियों को तथा 'रमाननाभं नवकुंकुमारूणम्' विधु को देखकर कृष्ण के मन में रिरंसा जागृत हुई, उन्होंने वामाक्षी व्रजसुन्दरियों के मनोहर और स्मराग्निदीपक गीत का गान किया था।

कला—विभाव के रूप में कृष्ण संगीतयोगी हैं। वे वेणुवादक हैं, नायक हैं और नर्तक भी हैं। रासारम्भ में उन्होंने मधुर गीत ही गाया था। उनके वेणुगीत पीयूषासव हैं, जिनकी मोहन—महिमा भागवत में वर्णित हैं। रास का वर्णन भी दशम स्कन्ध में है। गोपियां मण्डल में परस्पर बाहु—बन्ध करके खड़ी होती हैं, दो दो के बीच में कृष्ण खड़े हो जाते हैं और गोपियों के गले में अपना हाथ डाल लेते हैं। सभी गोपियां समझती हैं कि कृष्ण उन्हों के पास हैं। गोपियां उनके साथ वलय, नूपुर, किंकिणी की मधुर ध्वनि करती हुई नृत्य करती हैं। वे सविलास हस्तमुद्रा तथा पादन्यास करती हैं। नाचते—नाचते उनकी पतली कमर ऐसी लचक जाती थी मानो टूट गयी हो। कोई रतिप्रिया गोपी कृष्ण के स्पर्श से रोमांचित होकर अनुराग भरे कण्ठ से उच्च स्वर में गाती हैं और नाचती भी है। कोई गोपी कृष्ण के साथ—साथ गाती है और उनसे अधिक ऊंचे स्वर में राग अलापती है। उसके विलक्षण स्वर को सुनकर वे वाह—वाह कहने लगते हैं। उसी राग को एक दूसरी सखी ने ध्रुपद में गाया। कोई गोपी उनके चन्दन चर्चित बाहु को सूंघती हैं और चूमती हैं। कोई गोपी कृष्ण के कपोलों से अपना कपोल सटाकर उनके द्वारा चर्चित ताम्बूल को लेकर खा लेती है। कोई गोपी उनके हाथों को अपने उरोजों पर रख लेती है।

वेषभूषा विभाव की दृष्टि से भगवान् स्वयं ही लावण्यसार है। वे इतने सुन्दर हैं कि स्वयं काम का मन उनके सौन्दर्य से मथित होने लगता है। यद्यपि वेषभूषादि में उन्हें कान्ततर बनाने की क्षमता नहीं है, तथापि मनः कर्षणार्थ मनोदीपनार्थ उद्दीपन विभाव की दृष्टि से इन वेषभूषा का वही महत्व है, जो भगवान् के श्रृंगारिक हाव—भावों का है, सगुण—विग्रह का है। लोक की तर भगवान् के आभूषणों के प्रति कान्तिवर्धन को हेतु नहीं मान सकते, क्योंकि वे तो अखिल सौन्दर्य के एक मात्र स्थान है उनके अतिरिक्त कहीं सौन्दर्य है ही नहीं वे पीताम्बरधर हैं, उत्तरीय रखते हैं।

**वस्तुतः** रास कामवर्धक नहीं है अपितु “कामविजय प्रख्यापनार्थ सेयं रासलीला” कहा गया है। यह रास सदा के लिए एक बार ही वर्णित किया गया है। रास भागवत का प्राण है, इसीलिए इसका माहात्म्य सर्वोपरि है। रास में कृष्ण और गोपियों का अभेद्य, अभिन्न सम्बन्ध स्थापित किया गया है। **मूलतः** सभी एक ही तत्व हैं।

### संन्दर्भ

1. सर्ववेदान्तसारं हि श्रीभागवतमिष्यते ।  
तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्माद्रतिः कवचित् ॥ —भा०
2. भा०द० अध्याय—५९